

अल्लाह

वालों के 12 वाक़िआत

“कशफ़ुल महज़ूब” से

(सफ़़हात : 20)



दाता हुज़ूर का मुख़्तसर तज़ारूफ़ 01

हर ग़म के बदले एक नूर 07

हाफ़िज़े की तबाही का एक सबब 14

एक नेकी काम आ गई 16

أَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
أَمَّا بَعْدُ! فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

अल्लाह वालों के 12 वाक़िआत (क्रिस्त : 1)⁽¹⁾

दुआएं अतार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला “अल्लाह वालों के 12 वाक़िआत (क्रिस्त : 1)” पढ़ या सुन ले उसे अपने नेक बन्दों का खास फ़ैज़ान अता फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “जो शाख्स सुबहो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा बरोज़े क्रियामत मेरी शफ़ाअत उसे पहुंच कर रहेगी ।”
(الترغيب والترهيب، 1/261، حديث: 29)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيَّ مُحَمَّد

दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ का मुख़्तसर तअरूफ़

अबुल हसन, सय्यिद अली बिन सय्यिद उस्मान हजवेरी अल मारूफ़ दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की विलादते मुबारका कमो बेश 400 हिजरी में ग़ज़नी (अफ़ग़ानिस्तान) में हुई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ के ख़ानदाने आलीशान ने ग़ज़नी के दो महल्लों जुल्लाब व हजवेर में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई, इसी लिए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ हजवेरी जुल्लाबी कहलाते हैं ।
(फ़ैज़ाने दाता अली हजवेरी, स. 4)

¹... येह रिसाला मुफ़्ती सय्यिद गुलाम मोईनुद्दीन नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ के “कश्फ़ुल महज़ूब” के उर्दू तर्जमे से मवाद ले कर उस का फ़ारसी नुस्खे से तक्काबुल करवा के ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़ा कर के तय्यार किया गया है ।
(शोबा : हफ़्तावार रिसाला)

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का सिल्लिसलए नसब सात वासितों से नवासए रसूल, जन्नती जवानों क सरदार हज़रते इमाम हसन मुज्ताबा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से होता हुवा मुसलमानों के चौथे खलीफ़ा, हज़रते मौला अली رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से जा मिलता है। दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिद उस्मान हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अपने वक्त्र के बहुत बड़े आलिमे दीन और आबिदो ज़ाहिद बुजुर्ग थे और दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की वालिदए माजिदा दूसरे नवासए रसूल, इमामे आली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की आले पाक से थीं, यूं मेरे आका, मेरे दाता हुज़ूर रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ नजीबुत्तरफ़ैन (यानी वालिदे मोहतरम और वालिदए मोहतरमा दोनों की जानिब से) सय्यिद थे। वालिदए मोहतरमा भी बड़ी नेक सिफ़त, वलिय्या खातून थीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इन नेक हस्तियों की बरकात लिए हसनी जमाल और हुसैनी कमाल दोनों ही के जामेअ थे।

(फ़ैज़ाने दाता अली हजवेरी, स. 5 ता 6 माख़ूजन)

मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की शान में एक मन्क़बत लिखी है, उस के चन्द अश्आर येह हैं :

हो मदीने का टिकट मुझ को अता दाता पिया आप को ख़्वाजा पिया का वासिता दाता पिया
काश ! मैं रोया करूं इश्क़े रसूले पाक में सोज़ दो ऐसा पए अहमद रज़ा दाता पिया
गो ज़लीलो ख़वार हूं पापी हूं मैं बदकार हूं आप का हूं आप का हूं आप का दाता पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 543)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

इल्मी फ़ज़लो कमाल

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने इल्मे दीन हासिल करने के लिए अपने शहर से बाहर कई मुल्कों का सफ़र फ़रमाया, सिर्फ़ ख़ुरासान के तीन सौ मशाइख़ की खिदमत में हाज़िरी दी, साहिबे रिसालए कुशैरिया हज़रते सय्यिदुना अबुल

क्रासिम अब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ और हज़रते अबुल क्रासिम अब्दुल्लाह बिन अली गरगानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ आप के असातिज़ए किराम में से हैं। दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ख्वाजा अबुल फ़जल मुहम्मद बिन हसन जुनैदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के मुरीद थे। (كشف المحجوب، ص 24-25)

मामूलात और दीनी ख़िदमात

अल्लाह पाक ने अपने इस मर्दे कलन्दर, वलिये कामिल हुज़ूर दाता अली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को ड़लूमे ज़ाहिरी और बातिनी से नवाज़ा था और आप ने इल्मे दीन को आम फ़रमा कर ख़ूब ख़िदमते दीन फ़रमाई, आप ने कई कुतुब लिखीं, जिन में से चन्द के नाम येह हैं : ❶ मिन्हाजुदीन ❷ दीवान ❸ बहरुल कुलूब ❹ अर्रिआयतु बि हुकूकिल्लाह ❺ कश्फुल महजूब। अफ़सोस ! फ़ी ज़माना आप की किताबों में से सिर्फ़ “कश्फुल महजूब” (यानी पर्दों में छुपी बातों को ज़ाहिर करने वाली) ही आसानी से दस्तयाब है। अल्लाह पाक ने आप की इस किताब को बे पनाह मक्बूलियत से नवाज़ा है। दुनिया की कई ज़बानों में इस मुबारक किताब के तर्जमे हो चुके हैं और शायद लाखों कुतुब प्रिन्ट हुई हैं। मेरे प्यारे दाता हुज़ूर रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की मशहूरे ज़माना किताब “कश्फुल महजूब” से तय्यार किया गया येह रिसाला चन्द बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के वाकिआत पर मुश्तमिल है। वाक़ेई आप की किताब “कश्फुल महजूब” अपने नाम के मिस्दाक़ है। अल्लाह पाक की दाता हुज़ूर पर रहमत हो और आप के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की सीरत के बारे में मज़ीद मालूमात हासिल करने के लिए मक्तबतुल मदीना का रिसाला “फ़ैज़ाने दाता अली हजवेरी

(सफ़हात : 80)” पढ़िए और दावते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड कर के दूसरों को भी शेयर कीजिए। अल्लाह पाक ! हमें अपने औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ का अदबो एहतिराम करने और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उन की कुतुब व मल्फ़ूज़ात के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ﷺ صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿1﴾ दुआए वली ने तक्दीर बदल दी

सिल्सिलए आलिया क़ादिरिया रज़विय्या अत्तारिया के ग्यारहवें पीरो मुर्शिद हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने बाबुत्ताक़ (एक अलाक़े का नाम है, उस) के बाज़ार में एक आग की इबादत करने वाले शख़्स को देखा जो निहायत ख़ूबसूरत था, मैं ने बारगाहे इलाही में दुआ की : खुदाया ! इसे मेरी (यानी इस्लाम की) तरफ़ फेर दे, तूने इसे कितना ख़ूबसूरत पैदा किया है ! कुछ अर्से बाद वोह ग़ैर मुस्लिम मेरे पास आया और मुझ से कहने लगा : ऐ शैख़ ! मुझे कलिमए शहादत पढ़ाइए और मुसलमान कर के दर्जए विलायत तक पहुंचाइए।

(كشف المحجوب، ص 54)

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।

सच कहा कहने वाले ने :

दुआए वली में वोह तासीर देखी

बदलती हज़ारों की तक्दीर देखी

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ﷺ صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿2﴾ मैं अपने गुलामों के गुलाम से कुछ नहीं मांगता

किसी बादशाह की एक दरवेश से मुलाक़ात हुई, बादशाह ने अर्ज़ की :

अगर आप को किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो फ़रमाइए। उन्होंने जवाब दिया : मैं अपने गुलामों के गुलाम से कुछ नहीं मांगता। बादशाह ने पूछा : किस तरह ? दरवेश ने फ़रमाया : मेरे दो गुलाम हैं और वोह दोनों तेरे आक्रा हैं। एक हिर्स, दूसरा उम्मीद। (कشف المحجوب, ص 21)

अल्लाह रब्बुल इज़्जत की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़फ़िरत हो। اَمِيْن بِجَاوِزَاتِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ऐ आशिक़ाने रसूल ! जिस ने हिर्स और बेजा तमन्नाओं को अपना गुलाम बना लिया, वोह हक़ीक़ी मानों में बादशाह है और जो इन का गुलाम बन गया, वोह तख़्त पर बैठ कर भी फ़क़ीर है। इस वाक़िआ में उन बुज़ुर्ग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने हिर्स व उम्मीद को अपना गुलाम फ़रमाया है, मतलब येह कि मैं ने अपने नफ़्स को इस तरह क़ाबू में कर लिया है कि लालच और दुनिया की ख़्वाहिशात मेरे ताबेअ हैं, मैं इन का ताबेअ नहीं जब कि येह दोनों चीज़ें बादशाह की आक्रा हैं क्यूंकि वोह सल्तनत, माल, ताक़त और दुनिया की मज़ीद ख़्वाहिशात हासिल करने की हिर्स और उम्मीदों के पीछे चल रहा है, गोया बादशाह उन का गुलाम है और अल्लाह पाक के नेक बन्दे औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ अल्लाह पाक की अ़ता से हिर्स व उम्मीद की आफ़त से महफूज़ हैं इस लिए उन्हें बादशाहों से कुछ सरोकार नहीं। (इस वाक़िआ की मज़ीद ताईद आगे हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के वाक़िआ में पढ़िए)

सच कहा कहने वाले ने :

किस चीज़ की कमी है मौला तेरी गली में दुनिया तेरी गली में उ़क़बा तेरी गली में
तख़्ते सिकन्दरी पर वोह थूकते नहीं हैं बिस्तर लगा हुवा है जिन का तेरी गली में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿3﴾ बुरा भला कहने वाले को कुछ न फ़रमाया

हज़रते शैख अबू ताहिर हरमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ एक दिन दराज़गोश (यानी गधे) पर सुवार हो कर बाज़ार से गुज़र रहे थे, एक मुरीद लगाम थामे हुए साथ था। किसी ने बुलन्द आवाज़ से आप को बुरा भला कहा। मुरीद की ग़ैरत ने जोश मारा वोह उस शख्स की तरफ़ दौड़ा तो पीरो मुर्शिद ने मुरीद को आवाज़ दी और फ़रमाया : अगर तुम ने ख़ामोशी इख़्तियार की तो एक नसीहत वाली चीज़ दिखाऊंगा ताकि तुम इस सख्ती से बाज़ रहो। मुरीद ख़ामोश हो गया। जब घर पहुंचे तो मुरीद से फ़रमाया : फ़ुलां सन्दूक उठा लाओ। वोह लाया उस में बहुत से ख़ुतूत (Letters) थे जो कई लोगों की तरफ़ से हज़रते शैख अबू ताहिर हरमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के नाम लिखे थे। आप ने वोह ख़ुतूत निकाल कर मुरीद के आगे रख कर फ़रमाया : पढ़ो ! क्या लिखा है ? मुरीद ने देखा कि हर ख़त में उन के शैख के अल्फ़ाबात लिखे हैं। किसी ने शैखुल इस्लाम, किसी ने ज़की (यानी बहुत ज़ियादा ज़हीन) किसी ने शैख ज़ाहिद (यानी दुनिया से बे रग़बत) किसी ने शैखुल हरमैन वग़ैरा लिखा था। शैख अबू ताहिर हरमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने (आजिज़ी करते हुए) फ़रमाया : इन सब अल्फ़ाब में मेरा नाम नहीं है। हालांकि मैं कुछ भी नहीं हूं हर शख्स ने अपने गुमान के मुताबिक़ मुझे मुख़ातब किया (यानी बुलाया) है। अगर उस (यानी बाज़ार में बुरा भला कहने वाले) बेचारे ने अपने गुमान के मुताबिक़ कोई बात कह दी या कोई बुरा लक़ब दे दिया तो बिगड़ने या नाराज़ होने की कोई ज़रूरत नहीं।

(कشف المحجوب، ص 61)

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّيْ اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

﴿4﴾ नफ़्स का इम्तिहान लेने का मुन्फ़रिद अन्दाज़

मुसलमानों के तीसरे खलीफ़ा, हज़रते उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ एक दिन खजूरों के बाग़ से इस हाल में तशरीफ़ ला रहे थे कि लकड़ियों का गड्ढा आप के सर मुबारक पर रखा हुआ था हालांकि आप चार सौ गुलाम रखते थे। किसी ने अर्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह क्या हाल है ? आप ने फ़रमाया : أَرِيدُ أَنْ أُجَرِّبَ نَفْسِي : यानी मैंने चाहा कि अपने नफ़्स का तज़रिबा करूं। (كشف المحجوب، ص 62)

अल्लाह रब्बुल इज़्जत की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اَمِينٌ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

यानी अगरचें येह काम मेरे गुलाम भी कर सकते थे मगर मैंने चाहा कि अपने नफ़्स का इम्तिहान लूं ताकि लोगों में जो मक्कामो मर्तबा है उस की वजह से येह नफ़्स किसी काम से मुझे बाज़ न रखे।

उलुव्वे शान का क्यूं कर बयां हो आप की प्यारे हया करती है मौला आप से मख्लूके नूरानी

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿5﴾ हर रंग के बदले एक नूर

अल्लाह पाक के प्यारे नबी, हज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक गुदड़ी थी जिसे वोह अपने साथ आस्मान पर ले गए। एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने उन्हें ख्वाब में देखा कि उन की गुदड़ी के हर पैवन्द (यानी फटे हुए कपड़े वगैरा पर लगाए हुए जोड़) से नूर निकल रहा है। मैं ने अर्ज़ की : ऐ हज़रते मसीह वगैरा पर लगाए हुए जोड़) से नूर निकल रहा है। मैं ने अर्ज़ की : ऐ हज़रते मसीह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ! आप की गुदड़ी से येह अन्वार कैसे निकल रहे हैं ? फ़रमाया : येह मेरे इज़्तिरार (यानी बे क़रारी) और परेशानी के अन्वार हैं क्यूंकि मैं ने हर पैवन्द को इन्तिहाई ज़रूरत के वक़्त सिया था। अल्लाह पाक ने मेरे हर रंग के बदले मुझे एक नूर अता फ़रमाया। (كشف المحجوب، ص 48)

अल्लाह रब्बुल इज्जत की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।
 اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ।

मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त घुला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿6﴾ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की गोद में इमामे आजम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

हज़रते सय्यिद अली बिन उस्मान हजवेरी अल मारूफ़ दाता गंज बख़्श
 रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं मुल्के शाम में मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मुअज़्ज़िन हज़रते
 बिलाल رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के मज़ारे पुर अन्वार के सिरहाने सोया हुवा था, ख़्वाब में देखा
 कि मैं मक्कए पाक में हूं और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक बुजुर्ग को आगोश
 में बच्चे की तरह लिए हुए बाबे शैबा से दाखिल हो रहे हैं, मैं ने फ़र्ते महब्बत (यानी
 ग़ल्बए महब्बत) में दौड़ कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के क़दम मुबारक को चूम
 लिया, मैं बड़ा हैरान था कि येह बुजुर्ग कौन हैं ? (अल्लाह पाक की अ़ता से) हुज़ूर
 صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपनी मोज़िज़ाना शान से मेरे दिल की हालत का अन्दाज़ा
 हो गया, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : येह तुम्हारे इमाम (अबू हनीफ़ा
 नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ) हैं ।

येह वाकिआ बयान करने के बाद मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते
 हैं : इस ख़्वाब से येह बात ज़ाहिर हुई कि इमामे आजम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का इज्तिहाद
 हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की पैरवी में बे ख़ता है क्यूंकि वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ
 के पीछे ख़ुद नहीं जा रहे थे बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ख़ुद उन्हें उठाए लिए जा
 रहे थे चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से ख़ता हो ही नहीं सकती इस लिए जो हुज़ूर

ﷺ के साथ हो उस से भी खता का इम्कान नहीं। यह एक खूबसूरत इशारा है। (कشف المحجوب, स. 100, 101)

अल्लाह रब्बुल इज्जत की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ﷺ

हो नाइबे सरवरे दो आलम, इमामे आजम अबू हनीफ़ा

सिराजे उम्मत फ़क़ीहे अफ़खम, इमामे आजम अबू हनीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 583)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

﴿7﴾ हज़रते फ़ज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अस्ल में बादशाह हैं

फ़ज़ल बिन रबीअ बयान करता है कि मैं खलीफ़ा हारून रशीद के साथ हज के लिए मक्कए पाक हाज़िर हुवा, हज से फ़ारिग होने के बाद हारून रशीद ने मुझे कहा : अगर मर्दाने खुदा (यानी अल्लाह पाक के औलिया) में से कोई यहां मौजूद हो तो हम उस की ज़ियारत के लिए जाएंगे, मैं ने कहा : जी क्यूं नहीं ! इस जगह हज़रते अब्दुर्रज़ाक़ सन्आनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ हैं, उस ने कहा : मुझे उन के पास ले चलो, जब हम उन के पास पहुंचे तो बहुत देर तक गुफ़्तगू होती रही, रुख़्सत के वक़्त हारून रशीद ने मुझ से कहा : उन से पूछो कि क्या उन के ज़िम्मे कुछ कर्ज़ा है ? उन्होंने ने फ़रमाया : हां ! कर्ज़ा है, हारून रशीद ने मुझ से कहा : उन का कर्ज़ा अदा कर दो। जब हम वहां से वापस आए तो उस ने कहा : ऐ फ़ज़ल ! मेरा दिल किसी और बुजुर्ग से भी मिलने का शौक़ रखता है। मैं ने कहा : यहां हज़रते सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ भी हैं। उस ने कहा : उन के पास भी ले चलो। चुनान्चे जब हम हाज़िर हुए तो देर तक गुफ़्तगू होती रही, वापसी के वक़्त खलीफ़ा ने मुझे इशारा किया कि मैं उन से भी कर्ज़ के बारे में पूछूं, मैं ने पूछा तो फ़रमाया : हां ! कर्ज़ है।

खलीफ़ा ने मुझे हुक्म दिया कि उन का क़र्ज़ भी अदा कर दूँ, बाहर आ कर खलीफ़ा ने मुझ से कहा : ऐ फ़ज़ल ! अभी मेरा दिल नहीं भरा, किसी और बुज़ुर्ग से भी मुलाक़ात कराओ । मैं ने कहा : मुझे याद आया यहां हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ भी तशरीफ़ फ़रमा हैं फिर हम उन की खिदमत में हाज़िर हुए, वोह ऊपर एक गोशे में बैठे कुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे, मैं ने दस्तक दी ! अन्दर से आवाज़ आई : कौन है ? मैं ने जवाब दिया : अमीरुल मोमिनीन आए हैं, उन्होंने ने फ़रमाया : मुझे अमीरुल मोमिनीन से और उन्हें मुझ से क्या सरोकार ? हमारे कुछ बहसो मुबाहसे के बाद उन्होंने ने नीचे आ कर दरवाज़ा खोल दिया और चराग़ बुझा कर मकान के एक कोने में जा कर खड़े हो गए । मुसाफ़हे (यानी सलाम के दौरान हाथ मिलाने) के वक़्त हारून रशीद का हाथ उन के हाथ से मस (Touch) हुवा तो हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : अफ़सोस है कि इतना नर्मो नाज़ुक हाथ दोज़ख में जलेगा । काश ! कि येह हाथ अज़ाबे खुदा से महफूज़ रहता । हारून रशीद येह सुन कर रोने लगा और इतना रोया कि बेहोश हो कर गिर पड़ा । जब होश आया तो कहने लगा : ऐ फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइए ! आप ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! तेरा बाप (यानी हज़रते अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) हुजूरे अकरम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का चचा था । उन्होंने ने हुज़ूर صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दरख्वास्त की, कि मुझे अपनी क़ौम पर अमीर बना दीजिए ? हुज़ूर صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ चचा ! मैं ने तुम को तुम्हारी जान पर अमीर बना दिया क्यूंकि अगर एक सांस अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी में गुज़रे तो वोह उस से बेहतर है कि लोग हज़ार साल तक तुम्हारी फ़रमां बरदारी करें क्यूंकि सरदारी से क्रियामत के दिन सिर्फ़ और सिर्फ़ नदामतो शर्मिन्दगी के इलावा कुछ हासिल न होगा । हारून रशीद ने अर्ज़ की : और भी नसीहत फ़रमाइए ! हज़रते फ़ुज़ैल बिन

इयाज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : जब हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को लोगों ने खलीफ़ा बनाना चाहा तो हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने चन्द लोगों को बुलाया और उन से फ़रमाया : लोगों ने मुझे इस बला व मुसीबत में फंसा दिया है, मुझे क्या तदबीर करनी चाहिए ? क्योंकि मैं सरदारी को मुसीबत समझता हूँ अगर्चे लोग इसे नेमत खयाल करते हैं। उन में से एक ने अर्ज़ की : ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ! अगर आप चाहते हैं कि क्रियामत के दिन अज़ाबे इलाही से छुटकारा पाएं तो मुसलमान बुजुर्गों (बूढ़ों) को अपने वालिद की तरह और जवानों को भाई और बच्चों को अपनी औलाद की तरह समझें और उन सब के साथ वोही सुलूक कीजिए जो खानदान का सरबराह वालिद अपने भाइयों, बेटों और दीगर अहलो अयाल के साथ करता है। क्योंकि येह इस्लामी ममालिक एक घर की मानिन्द हैं और इन में रहने वाले अहलो अयाल। इस के बाद हज़रते फुज़ैल बिन इयाज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुझे ख़तरा है कि कहीं तुम्हारा येह ख़ूबसूरत चेहरा दोज़ख की आग में झुल्साया जाए। खुदा का ख़ौफ़ रखो और उस का हक़ बेहतरीन तरीक़े पर अदा करो। इस के बाद हारून रशीद ने अर्ज़ किया : आप पर कुछ क़र्ज़ है ? हज़रते फुज़ैल رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने जवाब दिया : हां ! खुदा का क़र्ज़ मेरी गर्दन पर है और वोह उस की इताअत है, मैं फ़िक्रमन्द हूँ कि इस वजह से मेरी पकड़ न हो जाए। हारून रशीद ने अर्ज़ की : क़र्ज़ से मुराद लोगों का क़र्ज़ है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह पाक का शुक्रो एहसान है। उस ने मुझे बहुत कुछ नेमत दे रखी है, मुझे कोई शिक्वा नहीं है कि लोगों से बयान करता फिरूँ। हारून रशीद ने एक हज़ार अशरफ़ियों की थैली आप के आगे रख दी और अर्ज़ की : इसे अपनी ज़रूरतों पर खर्च फ़रमाइए। हज़रते फुज़ैल बिन इयाज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरी इतनी

नसीहतों ने तुम पर कुछ असर नहीं किया और अभी तक जुल्म व हठधर्मी पर काइम हो ? हारून रशीद ने कहा : मैं ने आप पर क्या जुल्म व हठधर्मी का मुजाहरा किया है ? फ़रमाया : मैं तुम्हें नजात (यानी आखिरत के रास्ते) की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे मुसीबत में डालना चाहते हो । क्या येह जुल्मो जफ़ा नहीं है ? येह सुन कर हारून रशीद और फ़ज़ल बिन रबीअ दोनों रोने लगे और रोते हुए बाहर आ गए । इस के बाद हारून रशीद ने मुझे कहा : ऐ फ़ज़ल बिन रबीअ ! हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अस्ल में बादशाह हैं और येह सब (यानी उन की नसीहतों के सबब रोने की कैफ़ियत का तारी होना और दुनिया से बे राग़बती) उन के दबदबे की दलील है जो दुनिया और आखिरत के घर में उन्हें हासिल है, दुनिया की तमाम ज़ेबो ज़ीनत उन की नज़र में कोई हैसियत नहीं रखती ।

(كشف المحجوب، ص 105، 106)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।
 اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

क्यूँ फिरें शौक्र में हम माल के मारे मारे हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿8﴾ अल्लाह पाक की अता से

पीरे कामिल मुरीदों के हालात से वाकिफ़ होता है

सिल्सिलए आलिया क़ादिरिया रज़विyyा अत्तारिया के दसवें पीरो मुर्शिद हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की जाहिरी ज़िन्दगी शरीफ़ में मुरीदों ने हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ (जो कि हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के मुरीद व ख़लीफ़ा

थे इन) से अर्ज की : ऐ शैख ! हमें एक नसीहत फ़रमाइए जिस से हमारे दिलों को चैन व क्रार आए। आप ने फ़रमाया : जब तक मेरे शैख (हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ) अपने मक़ाम पर जल्वा अफ़रोज़ (यानी हयात) हैं मैं कोई तल्कीन नहीं कर सकता। यहां तक कि एक रात हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आखिरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार हुवा तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन से फ़रमाया : ऐ जुनैद ! लोगों को नसीहतें क्यूं नहीं करते ताकि अल्लाह पाक तुम्हारे ज़रीए एक जहान को नजात अता फ़रमाए। जब आप बेदार हुए तो आप येह खयाल फ़रमा रहे थे कि मेरा दर्जा मेरे शैख के दर्जे में पैवस्त (यानी शामिल) हो गया है और मुझे नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नेकी की दावत का हुक़म इरशाद फ़रमाया है। जब सुब्ह हुई तो हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने एक मुरीद को भेजा कि जब जुनैद नमाज़े फ़ज्र का सलाम फेरें तो उन से कहना : तुम ने मुरीदों के कहने से तालीमो तब्लीग़ न की और न मशाइखे बग़दाद की सिफ़ारिश क़बूल की। अब तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का हुक़म भी हो चुका है। हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : उस वक़्त मैं ने जाना कि मेरे शैख मेरे दिली खयालात को जानते हैं और वोह मेरी ज़ाहिरी व बातिनी हर हालत से बा ख़बर हैं। उन का दर्जा मेरे दर्जे से बुलन्द है क्यूंकि वोह मेरे दिली खयालात से वाकिफ़ हैं और मैं उन के हालात से बे ख़बर हूं। इस के बाद मैं अपने शैख की खिदमत में हाज़िर हुवा और तौबा व इस्तिफ़ार किया।

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मसिफ़रत हो। اٰمِيْنَ بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मेरे प्यारे दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ येह वाकिआ लिखने के बाद इरशाद फ़रमाते हैं : येह वाकिआ रौशन दलील है कि मुर्शिद जिस हाल में भी हो वोह मुरीदों की हर हालत से बा खबर होता है। (कشف المحجوب، ص 131)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿9﴾ ख़ूबसूरत लड़के को देखने की सज़ा

एक साहिब का बयान है कि मैं ने एक ग़ैर मुस्लिम ख़ूबसूरत अमरद लड़के को देखा। मैं उस का हुस्नो जमाल देख कर हैरान रह गया और उस के सामने जा कर खड़ा हो गया। इतने में हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का इधर से गुज़र हुवा, मैं ने उन से अर्ज़ की : ऐ उस्ताद ! अल्लाह पाक ऐसे हसीनो जमील चेहरे को दोज़ख में जलाएगा ? आप ने फ़रमाया : ऐ बेटे ! तेरा येह देखना इब्रत के लिए नहीं है बल्कि येह नफ़्स का खेल है क्यूंकि अगर तू निगाहे इब्रत से देखे तो आलम के हर ज़र्रे में ऐसे कई अजाइब मौजूद पाएगा। फिर (अल्लाह पाक की अज़ा से ग़ैब की खबर देते हुए इरशाद फ़रमाया :) तुझे बहुत जल्द मशिय्यते इलाही की बे हुर्मती की वजह से सज़ा मिलने वाली है। वोह साहिब बयान करते हैं : हज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ मुंह फेर कर तशरीफ़ ले गए तो उसी वक़्त मेरे हाफ़िज़े से कुरआने करीम फ़रामोश हो गया। यहां तक कि मैं ने सालों अल्लाह पाक से मदद मांगी और तौबा की, तब कहीं जा कर फिर से कुरआने करीम की नेमत मुझे हासिल हुई। (कشف المحجوب، ص 146)

हाफ़िज़े की तबाही का एक सबब

ऐ दीदारे मदीना के आरज़ूमन्द आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! अमरद (यानी ख़ूबसूरत लड़के) की तरफ़ “लज़्ज़त” के साथ देखने से हाफ़िज़ा भी तबाह हो सकता है।

आज कल याद दाश्त की कमी की शिकायत आम है, हुप्फ़ाज़ की भी एक तादाद हाफ़िज़े की कमज़ोरी की आफ़त में मुब्तला है और बहुत सों को तो कुरआने पाक ही भुला दिया जाता है (कुरआन शरीफ़ या फुलां आयत “भूल” गया कहने के बजाए “भुला दिया गया” कहना मुनासिब है) बद निगाही और, T.V वग़ैरा पर फ़िल्में ड्रामे देखना गुनाह व ह़राम और जहन्म में ले जाने वाला काम है और उस से हाफ़िज़ा भी कमज़ोर हो जाता है। हाफ़िज़ा कमज़ोर होने के और भी कई अस्बाब हैं लिहाज़ा ख़बरदार ! किसी हाफ़िज़ साहिब की मन्ज़िल कमज़ोर होने की सूरत में महज़ अपनी अटकल से ये ह ज़ेहन बना लेना कि बद निगाही के सबब ऐसा हुवा है, बदगुमानी है और मुसलमान पर बदगुमानी ह़राम और जहन्म में ले जाने वाला काम है। ऐ ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्के मुस्तफ़ा रखने वाले इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिए ! कि जब अमरद को शहवत के साथ देखने का इस क्रदर ख़ौफ़नाक अन्जाम है तो न जाने उस से आगे के बुरे कामों का अज़ाब किस क्रदर शदीद होगा !

अमीरे अहले सुन्नत बानिए दावते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ फ़रमाते हैं : ख़बरदार ! अमरद तो आग है आग ! अमरद का कुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्खरी, आपस में कुश्ती, खींचा तानी और लिपटा लिपटी जहन्म में झोंक सकती है। अमरद से दूर रहने ही में आफ़ियत है अगर्चे उस बेचारे का कोई कुसूर नहीं, अमरद होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिए मगर उस से अपने आप को बचाना बेहद ज़रूरी है।

(गीबत की तबाहकारियां, स. 329)

याद रहे ! अमरद के फ़क़त चेहरे ही को शहवत के साथ देखना गुनाह नहीं, निगाहें नीची होने के बावजूद अमरद के सीने या हाथ या पांव वग़ैरा बल्कि

सिर्फ़ लिबास ही पर नज़र पड़ रही हो और “गन्दी लज़ज़त” आ रही हो तो उन आज़ा या लिबास को देखना भी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर किसी लड़के की तरफ़ बार बार देखने को जी चाह रहा हो और गन्दी लज़ज़त के बाइस वहां से हटने का दिल न करता हो, तो वहां से फ़ौरन हट जाए। अगर शहवत के बावुजूद उस को देखा या वहां रहा तो गुनहगार और जहन्नम का हक़दार है। अल्लाहुल ग़फ़ार ! हमें अज़ाबे नार से महफूज़ फ़रमाए और अमरद के गुनाहों भरे कुर्ब से उम्र भर बचाए रखे। **اٰمِيْنَ بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**। बस पक्का ज़ेहन बना लीजिए कि बद निगाही की आफ़त और अमरद की नज़्दीकी की मुसीबत से हर हाल में **اِنْ شَاءَ اللهُ** अपनी हिफ़ाज़त करेंगे। (इस मौज़ूअ के मुतअल्लिक़ मज़ीद मालूमात के लिए अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला “क्रौमे लूत की तबाहकारियां” पढ़िए और दावते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड कर के दूसरों को भी शेयर कीजिए।)

छुप के लोगों से किए जिस के गुनाह वोह खबरदार है क्या होना है
काम ज़िन्दा के किए और हमें शौक़े गुल्ज़ार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिम बे परवा ! देख सर पे तलवार है क्या होना है
उन को रहम आए तो आए वरना वोह कड़ी मार है क्या होना है

(हदाइके बख़्शिश, स. 167-169)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْبُوْا اِلَیَّ اللهُ ❀❀❀ اَسْتَغْفِرُ اللهُ

❀❀❀ 10 ❀❀❀ एक नेकी काम आ गई

हज़रते अबू हफ़स उमर बिन सालिम ह़दाद **رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ** ख़ुरासान के बहुत बड़े बुजुर्ग थे। आप की तौबा का वाक़िआ बड़ा ही ईमान अफ़रोज़ है। आप

رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को जवानी में एक कनीज़ से इश्क़ हो गया। उसे मनाने की बहुत कोशिश की मगर कोई तदबीर काम न आई। लोगों ने बताया कि नेशापूर में एक ग़ैर मुस्लिम जादूगर रहता है जो जादू के ज़रीए इस काम को आसान कर सकता है। (यानी कनीज़ के दिल को आप की तरफ़ फेर सकता है) आप उस के पास पहुंचे और उस से अपना हाल बयान किया। ग़ैर मुस्लिम जादूगर ने कहा : ऐ अबू हफ़्स ! तुम्हें चालीस दिन नमाज़ छोड़नी होगी और इन चालीस दिनों में न तो ज़बान पर खुदा का नाम लाना होगा और न नेकी का कोई काम करना होगा। अगर इस पर राज़ी हो तो मैं जन्तर मन्तर पढ़ता हूँ ताकि तुम्हारी मुराद पूरी हो जाए। आप ने उस ग़ैर मुस्लिम जादूगर की ये शर्त मान ली और चालीस दिन इस तरह गुज़ार दिए। इस के बाद जब उस ग़ैर मुस्लिम जादूगर के पास पहुंचे तो उस ने अपना जादू किया मगर मुराद पूरी न हुई। जादूगर कहने लगा : ग़ालिबन तुम ने शर्त पूरी नहीं की। ज़रूर तुम से कोई ख़िलाफ़ वर्ज़ी हुई है और नेकी का कोई काम हुवा है। ज़रा सोच कर बताओ ! अबू हफ़्स ने कहा : मैं ने कोई नेकी का काम नहीं किया अलबत्ता ! एक दिन मैं ने रास्ते में पत्थर देखा तो उसे इस ख़याल से पांव से हटा दिया कि किसी को ठोकर न लग जाए। जादूगर बोला : अफ़सोस है तुम पर कि तुम ने चालीस दिन तक खुदा के हुक्म की ना फ़रमानी की और अपने दिल से यादे खुदा को भुलाए रखा लेकिन खुदा ने तेरे एक अमल को भी ज़ाएज़ नहीं जाने दिया। येह सुन कर आप ने सच्चे दिल से तौबा की और वोह ग़ैर मुस्लिम जादूगर भी मुसलमान हो गया।

(कشف المحجوب ص 130-131)

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मैं ने माना कि सब से बुरा हूं किस का हूं? तेरा हूं मैं तेरा हूं

नाज़ रहमत पे मुझ को बड़ा है या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 141)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

❀❀❀ 11❀❀❀ मूए मुबारक की बरकत

हज़रते अबुल अब्बास सय्यारी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के बारे में मशहूर है कि आप मर्व के अलाक़े के एक बड़े मालदार शख्स थे। आप ने अपने वालिद की मीरास में बहुत मालो दौलत पाया लेकिन येह तमाम मालो अस्बाब दे कर आप ने कहीं से हूज़रे अकरम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दो मूए मुबारक हासिल कर लिए। अल्लाह पाक ने आप को इन मूए मुबारक की बरकत से सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और फिर आप ने हज़रते अबू बक्र वासित्ती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की सोहबत में रह कर ऐसा कमाल पाया कि सूफ़ियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के इमाम हो गए। आप फ़रमाया करते थे कि मुझे जो कुछ मिला इन मूए मुबारक की बरकत से मिला। जब आप दुनिया से रुख़सत होने लगे तो वसियत की, कि इन मूए मुबारक को मेरे मुंह में रख देना चुनान्वे ऐसा ही किया गया। (दाता हूज़ूर रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :) इसी का असर है कि मर्व में आज भी आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मज़ार शरीफ़ का निशान है। लोग मज़ारे मुबारक पर हाज़िर हो कर मुरादें मांगते हैं और अपनी मुश्किलात दूर होने की दुआएं करते हैं तो उन की मुरादें पूरी और मुश्किलें आसान हो जाती हैं। येह बात तज़रिबे से साबित है। (कشف المحجوب، ص 165)

अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जो करे ताज़ीम दिल से दो जहां में कामयाब

हो गया हां हो गया मूए मुबारक आ गए

(वसाइले बख्शिश, स. 721)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

❀❀❀ 12❀❀❀ दिल की बात जान ली

एक बुजुर्ग बयान करते हैं कि एक दिन मैं हज़रते अबू अली बिन हुसैन बिन मुहम्मद दक्काक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की महफ़िल में इस लिए गया कि मैं उन से मुतवक्किलीन (यानी अल्लाह पाक पर तवक्कुल करने वालों) का हाल मालूम करूं। आप उस वक़्त एक निहायत उम्दा इमामा शरीफ़ सर पर बांधे हुए थे। मेरा दिल आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के इमामे शरीफ़ पर माइल हो गया। मैंने अर्ज़ किया : शैख ! तवक्कुल क्या है ? आप ने फ़रमाया : तवक्कुल यह है कि तुम लोगों के इमामे का लालच न करो। येह फ़रमा कर अपना इमामा शरीफ़ मेरे आगे रख दिया।

(كشف المحجوب، ص 170)

अल्लाह रब्बुल इज़्जत की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो। اٰمِيْنَ بِجَاةِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक्ररीबात, इज्तिमाआत, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अखबार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

दाता हुज़ूर رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का मुख्तसर तआरुफ़.....	1
इल्मी फ़ज़लो कमाल.....	2
मामूलात और दीनी ख़िदमात.....	3
(1) दुआए वली ने तक्दीर बदल दी.....	4
(2) मैं अपने गुलामों के गुलाम से कुछ नहीं मांगता.....	4
(3) बुरा भला कहने वाले को कुछ न फ़रमाया.....	5
(4) नफ़्स का इम्तिहान लेने का मुन्फ़रिद अन्दाज़.....	7
(5) हर ग़म के बदले एक नूर.....	7
(6) नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की गोद में इमामे आज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ8	
(7) हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ अस्त में बादशाह हैं9	
(8) अल्लाह पाक की अ़ता से पीरे कामिल मुरीदों के हालात से वाकिफ़ होता है...12	
(9) ख़ूबसूरत लड़के को देखने की सज़ा14	
हाफ़िज़े की तबाही का एक सबब14	
(10) एक नेकी काम आ गई16	
(11) मूए मुबारक की बरकत.....18	
(12) दिल की बात जान ली.....19	

अगले हफ्ते का रिसाला



DAWAE ISLAMI
INDIA



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099

🌐 www.maktabatulmadina.in 📧 feedbackmmhind@gmail.com

📦 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025